राजस्थान

के

किले

जैसलमेर का किला: रेगिस्तान का गौरव और एक जीवंत इतिहास

जैसलमेर का किला, जिसे "सोनार किला" या "स्वर्ण किला" के नाम से भी जाना जाता है, राजस्थान के जैसलमेर शहर में स्थित एक शानदार किला है। यह किला अपनी विशालता, सुनहरी वास्तुकला और सबसे खास बात, इसके अंदर बसे हुए जीवंत शहर के लिए प्रसिद्ध है। यह दुनिया के उन गिने-चुने किलों में से एक है जहाँ आज भी हजारों लोग रहते हैं, जिससे यह सिर्फ एक ऐतिहासिक स्मारक नहीं, बल्कि एक गतिशील और सांस लेता हुआ इतिहास बन जाता है।

इतिहास और निर्माण: थार रेगिस्तान की नींव

जैसलमेर के किले की स्थापना 1156 ई. में राजपूत शासक राव जैसल ने की थी। उन्होंने अपनी पुरानी राजधानी लोद्रवा को छोड़कर इस त्रिकुटा पहाड़ी (Trikuta Hill) पर एक नए किले का निर्माण कराया, क्योंकि यह स्थान रणनीतिक रूप से अधिक सुरक्षित था। यह किला पीले बलुआ पत्थर से बना है, जो दिन के अलग-अलग समय में सूर्य की रोशनी के साथ सुनहरी चमक बिखेरता है, इसीलिए इसे "सोनार किला" कहा जाता है।

यह किला कई बार विदेशी आक्रमणों का सामना कर चुका है, जिसमें अलाउद्दीन खिलजी और बाद में मुगल शासकों के हमले शामिल हैं। किले ने दो बड़े शाके देखे हैं, जहाँ राजपूत योद्धाओं ने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपनी जान दी थी। इनमें से एक साके में, जहाँ पुरुषों ने केसरिया बाना पहनकर लड़ते हुए अपनी जान दी थी, वहीं महिलाओं ने जौहर नहीं किया था, जो इसे अन्य राजपूत शाकों से अलग बनाता है।

वास्तुकला: तीन स्तर की सुरक्षा

जैसलमेर किले की वास्तुकला इसे अन्य किलों से अलग बनाती है। इसे सुरक्षा के तीन स्तरों के साथ डिज़ाइन किया गया था, जिससे इसे भेदना लगभग असंभव था:

* पहली दीवार: किले के सबसे बाहरी हिस्से में ठोस पत्थर की विशाल दीवारें हैं, जो हमलावरों को रोकती थीं।

* दूसरी दीवार: यह दीवार पहले से थोड़ी छोटी है, जो दुश्मनों को फंसाने के लिए बनाई गई थी।

* तीसरी दीवार: किले के भीतरी हिस्से में एक और मजबूत दीवार है, जिसके भीतर राजशाही और आम लोगों के निवास थे।

किले के भीतर प्रवेश के लिए चार विशाल द्वार हैं, जिन्हें गणेश पोल, अकाई पोल, हवा पोल, और सूरज पोल कहा जाता है। ये द्वार किले की सुरक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

किले के भीतर के प्रमुख आकर्षण

चूँकि जैसलमेर का किला एक जीवंत किला है, यहाँ पर्यटकों के लिए देखने और अनुभव करने के लिए बहुत कुछ है।

* राज महल (Raj Mahal): किले के भीतर सबसे प्रमुख संरचनाओं में से एक है राज महल, जो राजपूत शासकों का निवास स्थान था। यह महल अपनी जटिल नक्काशी, बालकनियों और रंगीन शीशों से सजा हुआ है। यहाँ के कमरों में उस समय की शाही जीवनशैली की झलक मिलती है।

* जैन मंदिर (Jain Temples): जैसलमेर किला कई प्राचीन और खूबसूरत जैन मंदिरों का घर है, जो 12वीं से 15वीं शताब्दी के बीच बनाए गए थे। ये मंदिर अपनी उत्कृष्ट नक्काशी, मूर्तियों और गुंबदों के लिए जाने जाते हैं। यहाँ के प्रमुख मंदिरों में चंद्रप्रभु मंदिर, ऋषभदेव मंदिर, और संभवनाथ मंदिर शामिल हैं। ये सभी मंदिर पीले बलुआ पत्थर से बने हैं और भारतीय जैन वास्तुकला का एक बेहतरीन उदाहरण हैं।

* लक्ष्मीनाथ मंदिर (Laxminath Temple): यह मंदिर किले के भीतर स्थित है और भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी को समर्पित है। यह मंदिर अपनी शानदार वास्तुकला के लिए भी प्रसिद्ध है।

* हवेलियाँ (Havelis): जैसलमेर किले की पहचान यहाँ की खूबसूरत हवेलियों से भी होती है। ये हवेलियाँ उस समय के अमीर व्यापारियों और मंत्रियों द्वारा बनाई गई थीं। इनमें से सबसे प्रसिद्ध पटवों की हवेली और नथमल की हवेली हैं। इन हवेलियों की जटिल नक्काशी, जालीदार खिड़कियाँ और बालकनियां स्थापत्य कला के उत्कृष्ट नमूने हैं। आज भी इनमें से कई हवेलियों में परिवार रहते हैं।

जैसलमेर का किला: एक आधुनिक शहर

आज, जैसलमेर का किला एक पर्यटन स्थल होने के साथ-साथ एक पूर्ण शहर भी है। किले के अंदर संकरी गलियाँ हैं, जहाँ दुकानें, होटल, रेस्टोरेंट और गेस्टहाउस स्थित हैं। यहाँ पर्यटक स्थानीय हस्तशिल्प, कपड़े और गहने खरीद सकते हैं। किले के भीतर रहने वाले लोग अपने पारंपरिक व्यवसायों को जारी रखे हुए हैं, जिससे यह किला अपनी सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखता है।

शाम के समय, जब सूर्य की सुनहरी रोशनी किले पर पड़ती है, तो इसका दृश्य बेहद मनमोहक होता है। किले से जैसलमेर शहर और थार रेगिस्तान का विशाल और सुंदर नज़ारा दिखाई देता है। यह नजारा सूर्यास्त के समय और भी अविस्मरणीय हो जाता है।

UNESCO विश्व धरोहर स्थल

जैसलमेर किला, राजस्थान के अन्य पाँच पहाड़ी किलों के साथ, 2013 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था। इस मान्यता ने इसके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को और भी बढ़ा दिया है।

जैसलमेर का किला सिर्फ एक इमारत नहीं है, बल्कि यह समय की कसौटी पर खरा उतरा एक इतिहास है। यह हमें राजपूतों के शौर्य, व्यापारियों की समृद्धि और एक जीवंत संस्कृति की कहानी सुनाता है जो आज भी साँस ले रही है।

बीकानेर का किला: जूनागढ़ किला - रेगिस्तान के मैदानों का गौरव

बीकानेर का किला, जिसे उसके वास्तविक नाम जूनागढ़ किला से जाना जाता है, राजस्थान के बीकानेर शहर के बीचों-बीच स्थित एक शानदार किला है। यह किला अपनी अनूठी वास्तुकला और ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है, क्योंकि यह भारत के उन कुछ किलों में से है जो पहाड़ी पर नहीं, बल्कि

समतल भूमि पर बनाया गया था। इसके बावजूद, इसकी सुरक्षा व्यवस्था इतनी अभेद्य थी कि इसे कभी भी सीधे युद्ध में नहीं जीता जा सका।

इतिहास और निर्माण: एक नई शुरुआत

जूनागढ़ किले का निर्माण 1589 और 1594 ईस्वी के बीच बीकानेर के छठवें राजा राजा राय सिंह द्वारा करवाया गया था, जो मुगल सम्राट अकबर के सबसे भरोसेमंद सेनापतियों में से एक थे। इससे पहले बीकानेर शहर में एक पुराना मिट्टी का किला था, जिसे राव बीका ने 1478 में बनवाया था। राव बीका ही बीकानेर के संस्थापक थे। लेकिन बाद में राजा राय सिंह ने उस पुराने किले से थोड़ी दूरी पर एक नया और मजबूत किला बनवाने का फैसला किया, और उसी को आज हम जूनागढ़ किले के रूप में जानते हैं।

किले की वास्तुकला में राजपूत, मुगल, और गुजराती शैलियों का एक सुंदर संगम देखने को मिलता है। इस पर मुगल कला का गहरा प्रभाव है, जो राजा राय सिंह के मुगल दरबार में लंबे समय तक रहने के कारण आया था। इस किले की भव्यता और इसकी ठोस संरचना इसे राजस्थान के अन्य किलों से अलग करती है।

अभेद्य वास्तुकला और प्रवेश द्वार

जूनागढ़ किला एक विशाल आयताकार आकार में बना हुआ है और इसकी बाहरी दीवारें 400 मीटर लंबी हैं। किले की दीवारें और बुर्ज (Burj) इतने मजबूत हैं कि वे किसी भी हमले का सामना कर सकते थे। किले के भीतर प्रवेश के लिए कई द्वार हैं, जिनमें से दो सबसे प्रमुख हैं:

* करण पोल: यह मुख्य प्रवेश द्वार है, जो अपनी भव्यता और सुंदरता के लिए जाना जाता है।

* सूरज पोल: यह किले का सबसे महत्वपूर्ण द्वार है, क्योंकि यह पूर्व दिशा में है और सूर्य की पहली किरणें सीधे इस पर पड़ती हैं, जो राठौर वंश के सूर्यवंशी होने का प्रतीक है।

किले के भीतर 37 बुर्ज हैं, जो चारों ओर से इसकी सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं।

जूनागढ़ किले के भव्य महल

जूनागढ़ किला कई शानदार महलों का घर है, जो अपनी उत्कृष्ट नक्काशी, शीशे के काम और सोने की सजावट के लिए जाने जाते हैं।

* अनूप महल (Anup Mahal): यह किले का सबसे सुंदर और महत्वपूर्ण महल है। यह राजाओं का दरबार था जहाँ वे अपने मेहमानों का स्वागत करते थे। इसकी दीवारों पर जटिल नक्काशी, रंगीन शीशे और सोने का बेहतरीन काम किया गया है।

* करण महल (Karan Mahal): इस महल का निर्माण महाराजा करण सिंह ने मुगलों पर अपनी जीत का जश्न मनाने के लिए करवाया था। यह भी अपनी दीवारों पर बने सुंदर चित्रों और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है।

* गज मंदिर (Gaj Mandir): यह एक शानदार महल है, जिसका उपयोग राजा के निजी आवास और बैठकों के लिए किया जाता था। इसकी दीवारों पर हिंदू देवी-देवताओं और पौराणिक कथाओं के चित्र बने हैं।

* फूल महल (Phool Mahal): यह किले का सबसे पुराना महल है, जो अपनी आकर्षक चित्रकारी और नक्काशी के लिए जाना जाता है।

* लाल गढ़ पैलेस (Lalgarh Palace): यह अक्सर जूनागढ़ किले के साथ भ्रमित होता है, लेकिन यह एक अलग और आधुनिक महल है जिसे महाराजा गंगा सिंह ने 20वीं शताब्दी में बनवाया था। इसे लाल बलुआ पत्थर से बनाया गया है और यह इंडो-सरसेनिक वास्तुकला का एक अद्भुत उदाहरण है।

धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व

जूनागढ़ किले में कई महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल भी हैं। किले के भीतर हर मंदिर नामक एक शाही मंदिर है, जहाँ राजा और उनका परिवार अपनी पूजा करते थे। यह मंदिर गणेश पोल के पास स्थित है और इसका उपयोग राजशाही परिवार के विवाह समारोहों और उत्सवों के लिए भी किया जाता था।

किले के भीतर एक और महत्वपूर्ण मंदिर रतन बिहारी मंदिर है, जो भगवान कृष्ण को समर्पित है।

जूनागढ़ संग्रहालय

जूनागढ़ किला आज एक शानदार संग्रहालय भी है, जिसमें बीकानेर के राठौर शासकों की समृद्ध विरासत को दर्शाया गया है। संग्रहालय में कई तरह की चीजें प्रदर्शित हैं, जिनमें शामिल हैं:

* शाही पोशाकें और गहने: यहाँ राजा-महाराजाओं और रानियों द्वारा पहनी जाने वाली पोशाकें और गहने हैं, जो उनके शाही जीवनशैली को दर्शाते हैं।

* हथियार: संग्रहालय में मध्यकालीन युग के कई हथियार हैं, जिनमें तलवारें, ढालें, कवच और बंदूकें शामिल हैं। यहाँ एक दुर्लभ हवाई जहाज भी है, जो प्रथम विश्व युद्ध के दौरान इस्तेमाल किया गया था और इसे अंग्रेजों ने महाराजा गंगा सिंह को भेंट किया था।

* पुराने दस्तावेज और चित्र: यहाँ उस समय के पुराने दस्तावेज, पत्र और चित्र भी हैं, जो बीकानेर के इतिहास और संस्कृति पर प्रकाश डालते हैं।

जूनागढ़ किला अपनी भव्यता, इतिहास और कला के लिए जाना जाता है। यह किला रेगिस्तान के मैदानों में होते हुए भी अपनी सुरक्षा और सुंदरता से आगंतुकों को आश्चर्यचकित करता है।

रणथंभौर का किला: हठ, शौर्य और प्रकृति का संगम

रणथंभौर का किला, राजस्थान के सवाई माधोपुर शहर के पास स्थित, भारत के सबसे मजबूत और सबसे प्रसिद्ध किलों में से एक है। यह किला अपनी ऐतिहासिक हठधर्मिता, अभेद्य सुरक्षा और रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान के घने जंगलों के बीच अपने अद्वितीय स्थान के लिए जाना जाता है।

इतिहास और निर्माण

इस किले की नींव 10वीं शताब्दी में चौहान शासकों द्वारा रखी गई थी। हालाँकि, इसके शुरुआती इतिहास के बारे में बहुत स्पष्ट जानकारी नहीं है। समय के साथ, इस किले पर कई शासकों ने राज किया, जिसमें चौहान, दिल्ली सल्तनत, मेवाड़ के राणा और अंत में मुगल शामिल थे।

इस किले का सबसे गौरवशाली समय राजा हम्मीर देव चौहान (1282-1301 ई.) के शासनकाल में आया। हम्मीर देव अपनी 'हठ' और शौर्य के लिए प्रसिद्ध थे। उनके बारे में एक कहावत है:

"सिंह गमन, सत्पुरुष वचन, कदली फलै इक बार।

तिरिया तेल, हम्मीर हठ, चढ़ै न दूजी बार॥"

इस कहावत का अर्थ है कि शेर एक बार जहाँ से चला जाता है, सज्जन व्यक्ति एक बार जो वचन दे देता है, और केले के पेड़ पर फल एक ही बार आते हैं, उसी तरह हम्मीर देव का हठ भी ऐसा था कि वह एक बार जो ठान लेते थे, उससे पीछे नहीं हटते थे।

जब दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने मंगोल विद्रोहियों को शरण देने पर हम्मीर देव से नाराजगी जताई, तो हम्मीर देव ने उन्हें सौंपने से इनकार कर दिया। इसके बाद 1301 ई. में खिलजी ने किले पर घेरा डाल दिया। इस युद्ध में, हम्मीर देव ने अपनी बहादुरी का परिचय दिया, लेकिन किले के भीतर जल और अनाज की कमी हो गई। आखिरकार, हम्मीर देव और उनके सैनिक युद्ध में शहीद हो गए, और उनकी रानियों ने भारत के पहले "जल जौहर" (जल में आत्मदाह) का प्रदर्शन किया, जो भारतीय इतिहास में एक दुखद और महत्वपूर्ण घटना है।

वास्तुकला और किले के भीतर के आकर्षण

रणथंभौर किला एक गिरि-दुर्ग (पहाड़ी किला) और एरण-दुर्ग (वन किला) दोनों की श्रेणी में आता है, क्योंकि यह एक पहाड़ी पर बना है और चारों ओर से घने

जंगलों से घिरा हुआ है। इसकी प्राकृतिक सुरक्षा इतनी मजबूत थी कि इसे आसानी से जीता नहीं जा सकता था। किले में कई खंडहर इमारतें और संरचनाएँ आज भी मौजूद हैं:

* रणथंभौर गणेश मंदिर (Trinetra Ganesh Temple): यह किले का सबसे प्रसिद्ध और पवित्र स्थल है। यह भारत का एकमात्र मंदिर है जहाँ भगवान गणेश अपने पूरे परिवार के साथ, अपनी दोनों पत्नियों रिद्धि-सिद्धि और पुत्र शुभ-लाभ के साथ विराजमान हैं। मंदिर की सबसे अनोखी बात यह है कि यहाँ भक्त अपनी मनोकामनाएँ पूरी करने के लिए गणेश जी को चिट्ठियाँ भेजते हैं। रोज हजारों की संख्या में डाकिए यहाँ चिट्ठियाँ लाते हैं।

* हम्मीर महल: यह राजा हम्मीर देव चौहान का महल था, जो अब खंडहर में बदल गया है, लेकिन इसकी वास्तुकला से इसकी भव्यता का अंदाजा लगाया जा सकता है।

* बादल महल और 32 खंभों की छतरी: बादल महल किले का एक और सुंदर खंड है, जबकि 32 खंभों की छतरी राजा हम्मीर देव के पिता जैत्र सिंह की याद में बनाई गई थी। यह छतरी अपनी बारीक नक्काशी और स्थापत्य के लिए जानी जाती है।

* गुप्त गंगा: किले के भीतर एक प्राकृतिक जल स्रोत है जिसे 'गुप्त गंगा' कहा जाता है। यह जल स्रोत 800 से अधिक वर्षों से लगातार बह रहा है और कभी सूखता नहीं है।

रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान से संबंध

यह किला रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान के बीच में स्थित है, जो बाघों (Tigers) के लिए एक प्रसिद्ध अभयारण्य है। किले की दीवारें और परिसर अक्सर बाघों, तेंदुओं और अन्य वन्यजीवों के लिए एक शांत और सुरक्षित ठिकाना बन जाते हैं। किले की यात्रा करने वाले पर्यटक अक्सर यहाँ से जंगल और वन्यजीवों का सुंदर दृश्य देख पाते हैं।

रणथंभौर किला सिर्फ एक ऐतिहासिक स्मारक नहीं, बल्कि एक जीवंत इतिहास है जो हमें राजा हम्मीर देव के अदम्य साहस, वीरता और एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की याद दिलाता है।